# हिन्दी

# लोटस बड एडिटोरियल

## कोरोना

कोरोना के दो साल,
पता ही न चला कब चले गए
कितने अपने परिवार के सदस्य खो बैठे,
और कितने बेघर हो गए।

कोरोना एक ऐसा कीटाणु,
जिसने जिंदगीयो  को तबाह कर दिया,
लोगों को घर पर बैठने के लिये मजबूर कर दिया
किंतु विभिन्न सीख भी प्रधान कर दिया

मोदी जी की नई सोच,
कभी डॉक्टरो के लिए तालियाँ,
तो कभी दिया जलाना,
यही थी हमारी जिन्दगी।

– वाणी सिंघानिया, १० 'ए'

## भारत हमारा देश

यह भारत है देश सबका, सुंदर और हरा भरा,
सरोवरों, नदियों और पर्वतों का है प्राचीन देश हमारा।

यह भारत है देश हमारा,
सभी त्योहारों – रोशनियों से सजी,
चारों ओर खुशियों से भरी, जिसका आनंद है असीम।

यह भारत है देश हमारा,
यहां के लोग हैं अत्यंत प्यारे, हर नगर हर प्रांत,
देता है सभी को सहारा।

यह  भारत है लोकप्रिय राष्ट्र,
जिसका प्यार है एक ही शास्त्र,
हर जाति के मानव यहाँ बस्ते,
रहते हैं सब हंसते हंसते।

– सनिका बिस्वास , १० 'सी

## मेरा परिवार

मेरा अपना छोटा सा परिवार
मुझे छोड़ सदस्य हैं चार
मिल  जुल करते सारा काम ,
हम सबका हैं "सादा जीवन उच्च विचार " ।

पापा जाते ऑफिस , माँ करती घर का काम,
हम सब विद्यालय जाते, अच्छी संगती में करते बात,
कहाँ चुप चाप बचपन बीता , पता ही नहीं चला
अब टीनएजर फ़ोन से करते सारा काम

एक कोर्स ऐसा भी कराया जाए,
जिसमे संस्कार सिखाया जाए,
बुज़ुर्गों का सम्मान ,छोटो की रक्षा,
भारत का करना सम्मान , यह फ़र्ज़ समझाया जाए।

– राधिका नथानी , १० 'सी'

## उड़ान

फौलादी हैं इरादें और असीम है वह नभ,
बस करके दिखा देने की ठान ली है अब।
आशाओं के पंखों पर टिके रहे बार – बार,
हर कठिनाई को निर्भीक कर देते हैं पार ।
आसमान की ऊंचाई में खो जाने का जोश,
ऐसी भावना जो ना प्रकट कर सके कोई शब्दकोश।
ना आंधी ना तूफान कोई रोक सके ना और,
सपनों के परिंदे उड़े ऊंचाई की ओर।
कोई  रुकावट ना हो पकड़ लो आकाश का हाथ,
यह जीवन का अनुभव कभी छोड़ेगा ना साथ।

– उन्नति मिश्रासमश्रा, १० 'सी'

**बारिश: एक कहानी**

हिंदी पौराणिक कथाओं में कई प्राकृतिक तत्वों की तरह, बारिश भी एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

मैं वरुण ब्रह्माण्ड महासागर से पैदा हुआ हूँ। मैं दिव्य जल का स्वामी तथा धर्म का रक्षक हूँ। मेरा अस्तित्व ब्रह्माण्ड और सभी जीवित प्राणियों के कल्याण से जुड़ा हुआ है।

मेरा प्राथमिक कर्तव्य दुनिया में संतुलन और सद्भाव बनाए रखना है। मैं सभी प्राणियों को जीवन प्रदान करता हूँ। बारिश के देवता के रूप में, मौसमी वर्षा को नियंत्रित करने के लिए ज़िम्मेदार हूँ।

हर साल, वर्षा के मौसम दौरान, मैं अपनी दिव्य पत्नी, वरुणी के साथ पृथ्वी पर आता हूँ। हम एक दिव्या रथ पर सवार हैं जो भुमि पर जीवनदायी वर्षा बरसाती है।

किसान हमारे आगमन का बेसब्री से इंतज़ार करते हैं क्योंकि हम उनके खेतों मैं प्रचुरता लाते हैं जिससे भरपूर फसल सुनिश्चित होती हैं।

– ज़हाबिया मरहबामरहिा, ९ 'सी'